हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में 'बदलते परिवेश में राजभाषा हिंदी को और अधिक व्यावहारिक, प्रासंगिक एवं सहज बनाने हेतु प्रगामी दृष्टिकोण' विषय पर आयोजित वेबिनार का संपूर्ण वृतांत ।

(आयोजन की तिथि-31 जुलाई, 2020, समय-11.00 से 1.00 बजे)

नियत तिथि एवं तय सारिणी के समानुरूप दिनांक 31 जुलाई, 2020 दिवस-शुक्रवार को हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में **'बदलते परिवेश में राजभाषा हिंदी को और अधिक व्यावहारिक, प्रासंगिक एवं सहज बनाने हेतु प्रगामी दृष्टिकोण'** विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया जिसमें श्री गुलशन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, एस0बी0आई-चंडीगढ़ द्वारा उपरोक्त विषय पर ऑनलाइन माध्यम से एक व्याख्यान दिया गया।

उपरोक्त 'वेबिनार' का सूत्रपात निदेशक महोदय के स्वागत भाषण के साथ हुआ जिसमें उन्होंने संस्थान के सभी कर्मचारियों/अधिकारियों (अर्थात गूगल ऐप्प के माध्यम से ऑनलाइन जुड़े हुए सदस्य एवं सभागार में भौतिक रूप में उपस्थित सदस्य) की ओर से **श्री गुलशन कुमार**, मुख्य महाप्रबंधक का हार्दिक अभिनंदन किया एवं वेबिनार का मंचन करने हेतु आग्रह किया ।

श्री गुलशन कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, द्वारा अपने वक्तवय में सर्वप्रथम वेबिनार के लिए निर्धारित विषय की

भूमिका रेखांकित की गई जिसमें उन्होनें, वेबिनार की विषयवस्तु में अंर्तभूत विभिन्न मौलिक शब्दों जैसे- व्यावहारिक/ प्रासंगिक / सहजता / प्रगामी नीति आदि की शब्दशः व्यंजना की। तदुपरांत, उन्होंने समसामयिक घटनाक्रमों को वर्तमान परिदृश्य से जोड़ते हुए कहा कि हाल ही में शिक्षा मंत्रालय द्वारा उद्घोषित नई शिक्षा नीति वास्तव में मातृभाषा, राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा के क्रमागत विकास में निःसंदेह एक प्रकाश स्तंभ की भूमिका का निर्वहन कर सकती है बशर्ते इस नीति का कार्यन्वयन मौलिक रूप में हो।

श्री गुलशन कुमार जी द्वारा राजभाषा में सहजता के लिए सामान्य शब्दावली में समिश्रित अंग्रेजी शब्दों यथा-वायरस, कंप्युटर, कैल्कुलेटर आदि को लेकर अतिरूढ़ होने की मानसिकता को एक संकुचित परिपाटी के रूप में उल्लिखित किया गया। वरन, उन्होनें परामर्श दिया कि अंग्रेजी भाषा के ऐसे शब्द जो हिंदी भाषा में सामान्य रूप से स्वीकार्य हो चुके हैं उनमें येन-केन-प्रकारेण बदलावों से यथासंभव परहेज किया जाए अन्यथा क्लिष्ट शब्दावली के समावेशन से राजभाषा में सहजता का 'पुट' तिरोहित हो सकता है। इसके अतिरिक्त उन्होंने तत्सम बाहुल्य शब्दावली (अर्थात संस्कृत के शब्द जैसे-सूरज के स्थान पर सूर्य का प्रयोग आदि) के प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि हिंदी भाषा में तत्सम शब्द रंजकता का भाव उत्पन्न करते हैं, एवं हिंदी भाषा को एक परिमार्जित/शुद्धत्तम स्वरूप प्रदान करते हैं अतः तत्सम शब्दावली युक्त हिंदी भाषा का यथोचित प्रयोग होना चहिए ।

वेबिनार के अगले चरण में शंकाओं, समस्याओं अथवा सवालों के निराकरण का अध्याय आरंभ हुआ जिसमें सर्व-प्रथम संस्थान के निदेशक डॉ एस.एस.सांमत द्वारा अंग्रेजी वर्चस्व के वर्तमान युग में हिंदी भाषा के समक्ष बुनियादी चुनौतियों जैसे-साक्षात्कारों में अंग्रेजी भाषा का सामान्य प्रचलन, वैज्ञानिक व्याख्यानों की अंग्रेजी भाषा में अभिव्यक्ति जैसे ज्वलंत विषयों पर प्रश्न रेखांकित किए गए, जिनके प्रतिउत्तर में, श्री गुलशन जी द्वारा भाषा के चयन (चाहें साक्षात्कार में भाषा का चयन हो अथवा किसी व्याख्यान में भाषा के चयन का प्रश्न हो) को साक्षात्कार कर्ता अथवा व्याख्याता के व्यक्तिगत विवेक का विषय बताया गया अर्थात यदि साक्षात्कारकर्ता अथवा व्याख्याता चाहे तो वह अंग्रेजी भाषा के स्थान पर हिंदी भाषा को प्राथमिकता देकर वर्तमान अंग्रेजी उन्मुखी परिस्थितियां में बदलाव उत्पन्न कर सकते हैं ।

वेबिनार की इस श्रृंखला में अगला प्रश्न श्री नीलेश यादव, वै0 ई द्वारा भाषा अनुवाद में अनुभव की जाने वाली विभिन्न जटिलाओं के संबंध में किया गया जिसके बारे में श्री गुलशन जी द्वारा इस क्षेत्र में प्रचलित नाना प्रकार की प्रविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी सांझा की गई ।

इस वेबिनार के अंतिम चरण में, संस्थान के निदेशक महोदय द्वारा श्री गुलशन जी का संस्थान की ओर से राजभाषा के विभिन्न आयामों को बोधगम्य एवं सहजता के साथ पटल पर रखने हेतु आभार व्यक्त किया गया। इस अवसर पर निदेशक, हि.व.अ.सं द्वारा उपस्थित विभिन्न प्रभागाध्यक्षों एवं समस्त कर्मचारियों/अधिकारियों का भी इस वेबिनार से जुड़ने पर हर्ष व्यक्त किया गया । अपने धन्यवाद प्रस्ताव के अंतिम अंशों में उन्होंनें सहायक निदेशक, राजभाषा (प्रभारी) तथा उनके सहयोगियों को इस वेबिनार के सफल आयोजन के लिए शुभकामना संदेश दिया ।

-इति-

(हस्ताक्षरित)
सहायक निदेशक राजभाषा (प्रभारी)
हि.व.अ.सं, शिमला

*यह वृतांत हिमालयन वन अनुसंधान की आधिकारिक वेबसाईट www.hfri.icfre.org पर उपलब्ध है ।